अमर उजाला
वाराणसी
शुक्रवार, 10 नवंबर 2017

'कैसे निठुर श्याम बिसर गयो धाम...'

ध्रुपद महोत्सव

चौताल-सूल ताल की बंदिशों संग तीन दिवसीय ध्रुपद महोत्सव आरंभ

सुर बहार पर पखावज के ताल-नाद गूंजे, स्वरों की बेजोड़ अवतारणा

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी।

चौताल, सूल ताल की बंदिशों के आलाप और ताल नाद के समन्वय के साथ गुरुवार की शाम ध्रुपद मेला हर किसी के लिए यादगार बन गया। सुरों के आलाप में कुंज गली में रास के वर्णन पर संगीत के गुणी झूम तो सुर बहार पर दिल को छू जाने वाली गतकारी ने मुग्ध कर दिया। इसी के साथ बीएचयू के पं. ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में तीन दिवसीय ध्रुपद महोत्सव आरंभ हो गया।

दीप प्रज्ज्वलन के बाद शुरुआत हुई खैरागढ़ से आईं ध्रुपद गायिका सोमबाला कुमार के गायन से। उन्होंने राग भीमपलासी की अवतारणा की। चौताल में निबद्ध बंदिश के बोल थे- कुंजन में रचो रास अद्भुत गत लियो गोपाल की... बेजोड़ प्रस्तुति की। इसके बाद सूलताल में निबद्ध रचना के बोल थे- कैसे निठुर श्याम बिसर गयो धाम...। इनके साथ पखावज पर संगत की पृथ्वीराज कुमार ने।

ध्रुपद महोत्सव में गायन प्रस्तुत करतीं सोमबाला कुमार। *अमर उजाला*

सारंगी पर अनीश मिश्र और तानपूरे पर ऐश्वर्या और गीतिका ने संगत की। इनके बाद मुंबई से आए पुष्पराज कोष्टी ने सुर बहार के तारों संग तन-मन को झंकृत कर दिया। इन्होंने राह हंस किंकिणी की अवतारणा की। आलाप, जोड़, झाला के बाद चार ताल में निबद्ध गत की मोहक प्रस्तुति की। पखावज पर दालचंद शर्मा ने ताल नाद के समन्वय से जमकर तालियां बटोरीं। तानपूरे पर संस्मृति दास गुप्ता ने संगत की। अंत में विख्यात ध्रुपद गायक उदय भवालकर ने आलापचारी की। तानपूरे पर धीरज शर्मा और ऋषभ चतुर्वेदी थे। यह ध्रुपद महोत्सव इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, भारत अध्ययन केंद्र और बीएचयू के संगीत एवं मंच कला संकाय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस मौके पर प्रो. कमलेश दत्त द्विवेदी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के निदेशक डॉ. विजय शंकर शुक्ल, डॉ. के शशि कुमार, प्रो. ऋत्विक सान्याल, डॉ. ज्ञानेश आदि उपस्थित थे।

ध्रुपद की अप्रचलित बंदिशों का डिजिटलाइजेशन कराने पर जोर

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी।

काशिराज डॉ. अनंत नारायण सिंह ने गुरुवार की शाम ध्रुपद मेला की तर्ज पर काशी में ठुमरी-चैती उत्सव कराने का सुझाव इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र को दिया। ध्रुपद महोत्सव के उद्घाटन के बाद उन्होंने अप्रचलित हो चुकी ध्रुपद की बंदिशों के संरक्षण पर जोर दिया। कहा कि जो बंदिशें अब चलन में नहीं हैं, उनका संकलन कर डिजिटलाइजेशन कराया जाना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियां उनके बारे में जान सकें।

उन्होंने भरोसा जताया कि महाराजा विद्या बनारस न्यास ध्रुपद गायन की परंपरा के संरक्षण के लिए हमेशा अग्रणी भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा कि गुरुजनों जो बंदिशें पुराने कलाकारों के स्मरण में हैं, उन्हें संरक्षित करने की जिम्मेदारी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र को उठानी चाहिए। इसमें न्यास मदद करेगा।

महोत्सव को संबोधित करते काशिराज अनंत नारायण सिंह।

गिरिजा देवी की याद में ठुमरी-चैती उत्सव कराने को काशिराज का सुझाव

उन्होंने इस काम में कलाकारों से सहयोग करने की अपील भी की। काशिराज ने ठुमरी साम्राज्ञी गिरिजा देवी को याद किया। बीएचयू के संगीत एवं मंच कला संकाय और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कल केंद्र को उन्होंने सुझाव दिया कि ध्रुपद के साथ ही ठुमरी-चैती को बढ़ावा देने के लिए भी काम होना चाहिए। इसके लिए ठुमरी साम्राज्ञी की याद में प्रतिवर्ष ठुमरी -चैती उत्सव कराया जाना चाहिए। काशिराज के इस सुझाव का कलाकारों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

आज
वाराणसी, ८ नवम्बर २०१७

त्रिदिवसीय ध्रुपद महोत्सव कलसे

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, भारत अध्ययन केन्द्र तथा बीएचयू संगीत एवं मंच कला संकाय की ओर से नौ से ११ नवम्बर तक बीएचयू पण्डित ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में त्रिदिवसीय ध्रुपद महोत्सव का आयोजन किया गया है। महोत्सव का उद्घाटन कुंवर डाक्टर अनन्त नारायण सिंह करेंगे। यह जानकारी देते हुए डाक्टर विजय शंकर शुक्ल एवं प्रोफेसर सदाशिव कुमार द्विवेदी ने बताया कि महोत्सव प्रतिदिन अपराह्न तीन बजे प्रारम्भ होगा। समापन समारोह के मुख्य अतिथि मण्डलायुक्त नितिन रमेश गोकर्ण होंगे। उन्होंने बताया कि प्रथम निशा पर श्रीमती सोमबाला कुमार का गायन, पण्डित पुष्पराज कोष्टी का सुरबहान वादन, पण्डित उदय भवालकर का गायन होगा।

द्वितीय निशा पर पद्मश्री पण्डित गुन्देचा बंधु का गायन, पण्डित पृथ्वीराज कुमार का पखावज स्वतंत्र वादन, डाक्टर विशाल जैन का गायन तथा तीसरी निशा पर प्रोफेसर कावेरी का गायन, पण्डित रविशंकर उपाध्याय का पखावज वादन एवं प्रोफेसर ऋत्विक सान्याल गायन प्रस्तुत करेंगी।

राष्ट्रीय
सहारा
वाराणसी • बुधवार • 8 नवम्बर • 2017

ध्रुपद महोत्सव कल से

वाराणसी। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र (वाराणसी) द्वारा भारत अध्ययनकेंद्र तथा बीएचयू संगीत एवं मंच कला संकाय के संयुक्त तत्वावधान में पं. ओंकार नाथ ठाकुर

प्रेक्षागृह में तीन दिवसीय ध्रुवपद महोत्सव का आयोजन नौ से 11 नवम्बर तक किया गया है। मंगलवार को करौंदी स्थित पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिसर में क्षेत्रीय केंद्र में आयोजित पत्रकार वार्ता में क्षेत्रीय निदेशक डा. विजय शंकर शुक्ल एवं क्वाडिनेटर सदाशिव कुमार द्विवेदी ने बताया कि यह केंद्र भारतीय शास्त्रीय एवं लोक संगीत की समृद्ध विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासरत है। क्षेत्रीय केंद्र द्वारा विगत वर्षों में आयोजित किये गये अनेक कार्यक्रमों में की ऋृखंला में ध्रपद माहेत्व का आयोजन एक महत्वपूर्ण कड़ी है। जिसका उद्देश्य इस विधा के ख्यातिलब्ध कलाकारों के साथ-साथ उदीयमान कलाकारों को एक मंच प्रदान करना है। डा. शुक्ला ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ नौ नवम्बर को अपराह्न 2.30 बजे महाराज कुंवर डा. अनन्त नरायण सिंह द्वारा किया जायेगा। कार्यक्रम का समापन 11 नवम्बर को अपराह्न तीन बजे होगा। इस मौके पर मुख्य अतिथि मंडलायुक्त नितिन रमेश गोकर्ण होंगे।

अमर उजाला | वाराणसी | रविवार, 12 नवंबर 2017

'कुंजन में कान्हा रचो रास...'

बीएचयू के ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में तीन दिवसीय ध्रुपद महोत्सव की आखिरी निशा

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी।

डागर घराने की ध्रुपद गायकी की परंपरा शनिवार की रात जीवंत हुई। मौका था ध्रुपद महोत्सव की तीसरी और आखिरी शाम का। इस दौरान चौताल और सूल ताल में रागों पर अलापचारी यादगार बन गई।

प्राचीन वाद्य पखावज पर ताल नाद खूब गूंजे। पखावज पर पारंपरिक बंदिशों के अलावा परणों की बेजोड़ प्रस्तुति की गई। इसी के साथ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, भारत अध्ययन केंद्र और बीएचयू के संगीत एवं मंच कला संकाय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित महोत्सव का समापन हो गया।

बीएचयू के पं. ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में दीप प्रज्ज्वलन के बाद महोत्सव की शुरूआत हुई। प्रसिद्ध ध्रुपद गायिका प्रो. कावेरी कर ने राग भीम पलासी की अवतारणा की। चौताल में निबद्ध बंदिश के बोल थे- कुंजन में रचो रास...। इसके बाद सूल ताल में दूसरी बंदिश के बोल थे-अब गुन गुनीजन कृपा करें करतार...। फिर राग रागेश्री में धमार की उन्होंने प्रस्तुति की। बंदिश के बोल थे- सांवरो खेल रह्यो है...। पखावज पर संगत की अंकित पारिख ने। इनके बाद दिल्ली से आए पं. रविशंकर उपाध्याय ने पखावज पर ताल प्रयोगों से मुग्ध किया। गणेश परन के बाद, तिहाई, पलटा की चौताल में प्रस्तुति की। सारंगी पर लहरा दिया पं. संतोष कुमार मिश्र ने। अंत में ध्रुपद गायक प्रो. ऋत्विक सान्याल ने राग जोग की अवतारणा की। बंदिश के बोल थे-प्यारी तोरे नैनन मीन कर ली।

इसके बाद सूल ताल में स्वरचित रचना की प्रस्तुति की। फिर राग दरबारी में धमार- सजन बिन खेलत मद बिरहन होरी... की प्रस्तुति से उन्होंने संगीत प्रेमियों को मुग्ध कर दिया। पखावज पर दालचंद शर्मा ने और तानपूरे पर आशीष जालान, धीरज शर्मा और अनुराधा रतूड़ी ने संगत की। संचालन ज्योति सिंह ने और धन्यवाद ज्ञापन प्रो. के शशि कुमार ने किया।

ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में गायन पेश करतीं प्रो. कावेरी कर। अमर उजाला

रविवार, 12 नवंबर, 2017
जनसंदेश टाइम्स

ध्रुपद गायन में प्रो.कावेरी ने जमाया गायकी का रंग

गीत-संगीत

चिर परिचित डागर घराना का जीवंत प्रदर्शन

पं.रविशंकर और ऋत्विक सान्याल की गायकी ने समा बांधा

वाराणसी। बीएचयू के पंडित ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में विश्वभारती शांति निकेतन की विख्यात ध्रुपद गायिका प्रो.कावेरी कर के गायन का आयोजित किया गया। अलाप जोड़, झाला, के माध्यम में सुरमधुर समां बांधा, चीर परिचित डागर परंपरा को जीवंत प्रदर्शन किया।

पखावज पर अंकित पारिख ने संगत की। उन्होंने राग भीम पलासी में आलाप, चौताल में कुंजन मे रचो रास, सूलताल में अब गुन गुनीजन कृपा कर करतार, राग श्री में धमार सावरों खेल रह्यो है। पखावज पर संगत डा.अंकित पारिख ने की।

कार्यक्रम की द्वितीय प्रस्तुति दिल्ली के पं.रविशंकर उपाध्याय के पखावज पर स्वतंत्र वादन के रूप में रहा। उन्होंने पराल, परण, रेला आदि का प्रभावशाली प्रस्तुति किया। इस दौरान काशी के प्रसिद्ध सारंगी वादक पं.संतोष कुमार मिश्र ने संगत किया। गणेश स्तुति, तिहाई, अकाल, पटत, ताल चौताल से प्रस्तुति की। पंडित उपाध्याय दिल्ली के कथक केंद्र में प्रतिष्ठित पखावज गुरुपद पर कार्यरत. हैं। पखावज वादन की शिक्षा पिता और गुरु पंडित रामजी उपाध्याय से प्राप्त की।

कार्यक्रम की तृतीय पस्तुति काशी के महान ध्रुपद गायक पं.ऋत्विक सान्याल ने अलाप, जोड़, झाला के माध्यम से कर्णप्रिय प्रस्तुति दी। पखावज पर प्रसिद्ध पखावजी पंडित डालचंद शर्मा ने प्रभावशाली संगत की। उन्होने राग-जोग जिते अगर परंपरा मे चलनाट कहते हैं। चारताल मे निबद्ध रचना की हृदय स्पर्शी प्रस्तुति दी। इस अवसर पर तानपुरे पर आशीष जयसवाल, धीरज शर्मा और अनुराधा रतूड़ी ने संगत की।

'प्यारी तोरे नैनन मीन कर लीने' तथा स्वरचित रचना 'जोगी वर शिव राग जोग श्रुति ज्ञान' सुलताल में निबद्ध प्रस्तुति दी। राग दरबारी में धमार 'सजन बिन खेलत मद बिरहन होरी'

बीएचयू के संगीत एवं मंच कला संकाय तथा भारत अध्ययन केंद्र और क्षेत्रीय इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के ओर से चल रहे तीन दिनी ध्रुपद महोत्सव के दूसरे दिन शनिवार को धन्यवाद ज्ञापन प्रो.शशि कुमार ने और संचालन ज्योति सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रो.केडी त्रिपाठी, डा.विश्वनाथ पांडेय, प्रो.वनमाला परवतकर, संजय सिंह, गौतम चटर्जी, डा.प्रेम नारायण सिंह, अशोक पपुर, डा.सुभाष चंद्र यादव, प्रो.शारदा वेलंकर, प्रो.रेवती साकलकर, प्रो.संगीता पंडित, डा.रमाशंकर, डा.नरेंद्रदत्त तिवारी, डा.रमा दूबे आदि उपस्थित रहीं।

www.jagran.com
वाराणसी, 12 नवंबर 2017
दैनिक जागरण

गायन संग ध्रुपद महोत्सव का समापन

जागरण संवाददाता, वाराणसी : इंदिरा गांधी नेशनल आर्ट सेंटर, भारत अध्ययन केन्द्र व परफॉर्मिंग आर्ट्स संकाय बीएचयू की ओर चल रहे ध्रुपद महोत्सव के तीसरे व अंतिम दिन कलाकारों ने प्रस्तुति देने के साथ श्रोताओं और जिज्ञासुओं को ध्रुपद गायिकी की खासियत से परिचित कराया। पंडित ओंकार नाथ ठाकुर ऑडिटोरियम में कार्यक्रम की शुरुआत विख्यात ध्रुपद गायिका प्रो कावेरी के गायन से हुआ। प्रो. कावेरी ने राग भीमपलासी में आलाप, पखावज पर डा. अंकित पारिख ने साथ दिया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए दिल्ली से आये पंडित रविशंकर उपाध्याय ने स्वतंत्र पखावज वादन कर श्रोताओं की वाहवाही बटोरी। सारंगी पर पंडित संतोष कुमार मिश्र ने संगत की। अगली कड़ी में काशी के प्रख्यात ध्रुपद गायक ऋत्विक सान्याल ने अलाप, जोड़ झाला की मधुर प्रस्तुति दी। पखावज पर पंडित डालचंद शर्मा व तानपूरे पर आशीष, धीरज शर्मा व अनुराधा ने संगत की। संचालन अनुराधा ने किया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि राजा मान सिंह तोमर संगीत विवि के पूर्व कुलपति प्रो चितरंजन ज्योतिषी उपस्थित थे। डीन प्रो के शशिकुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रो. केडी त्रिपाठी, डा. विश्वनाथ पांडेय, प्रो. रेवती साकलकर, प्रो. शारदा वेलंकर, प्रो. संगीता पंडित और डा. ज्ञानेशचंद पाण्डेय आदि थे।

हिन्दुस्तान
वाराणसी • रविवार • 12 नवंबर 2017

ऋत्विक के गायन से ध्रुपद महोत्सव संपन्न

ध्रुपद महोत्सव में शनिवार को गायन करतीं प्रोफेसर कावेरी कर। • हिन्दुस्तान

वाराणसी | प्रमुख संवाददाता

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, बीएचयू स्थित भारत अध्ययन केंद्र, संगीत एवं मंच कला संकाय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय ध्रुपद महोत्सव का समापन शनिवार को हुआ।

बीएचयू के पं. ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में आयोजित महोत्सव के तीसरे सत्र का मुख्य आकर्षण डा. ऋत्विक सान्याल का गायन रहा। डा. सान्याल ने राग जोग में गायन किया। इसके उपरांत चौताल में निबद्ध बंदिश के माध्यम से ध्रुपद की बारीकियों से श्रोताओं को अवगत कराया। स्वरचित बंदिश के साथ उन्होंने सूलताल में निबद्ध रचना भी श्रोताओं पहुंचाई। उनके साथ प्रसिद्ध पखावजी पं. डालचंद्र शर्मा जबकि तानपुरे पर आशीष सान्याल, धीरज शर्मा एवं अनुराधा रतूड़ी ने संगत की।

इससे पूर्व तीसरे दिन के कार्यक्रमों की शुरुआत कोलकाता के शांति निकेतन से आई प्रो. कावेरी कर के गायन से हुई। उन्होंने राग भीम पलासी में आलाप और चौताल में बंदिश सुनाई। उनके साथ पखावज पर अंकित पारिख ने संगत की। इसके बाद दिल्ली के पं. रविशंकर उपाध्याय का स्वतंत्र पखावज वादन हुआ। कार्यक्रम का सफल संचालन ज्योति सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन संकाय प्रमुख प्रो. के. शशिकुमार ने किया। इस अवसर पर डा. कमला शंकर, प्रो. केडी त्रिपाठी, डा. विश्वनाथ पांडेय, संजय सिंह, गौतम चटर्जी, डा. प्रेम नारायण सिंह, अशोक कपूर, डा. सुभाषचंद्र यादव, प्रो. शारदा वेलेंकर, प्रो. रेवती साकलकर, प्रो. संगीता पंडित, डा. रमाशंकर, डा. नरेंद्रदत्त आदि मौजूद थे।

वाराणसी, 11 नवंबर 2017 दैनिक जागरण

गुंदेचा बंधुओं ने की सुरों की रसवर्षा, श्रोता विभोर

महोत्सव के दूसरे दिन कलाकारों ने प्रस्तुत की कला साधना

जागरण संवाददाता, वाराणसी : काशी हिंदू विश्वविद्यालय के पं. ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में आयोजित ध्रुपद महोत्सव के दूसरे दिन शुक्रवार को गुंदेचा बंधुओं के गायन ने श्रोताओं को संगीतरस का पान कराया। संगीत मंच एवं कला संकाय तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की ओर से आयोजित इस महोत्सव में गुंदेचा बंधुओं ने अपने कार्यक्रम की शुरुआत राग मुल्तानी में पारंपरिक अलाप से की। इसके बाद उन्होंने चौताल में निबद्ध बंदिश वंशीधर पिनाक धर सुनाया। इसके बाद उन्होंने सुरताल में देवी दयानी सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। पखावज पर उनका साथ डा. अंकित पारीख, तानपुरे पर पूर्णिमा कुमारी व अंजलि ने दिया।

इसी कड़ी में खैरागढ़ से आए पं. पृथ्वीराज कुमार ने मंच संभाला। उन्होंने स्वतंत्र पखावज वादन कर श्रोताओं को ताल व लय की बारीकियों से परीचित कराया। पं. कुमार ने चौताल में उठान, प्रस्तार, परन, लपेट, रेले, खड़ी प्रस्तुत कर श्रोताओं की वाहवाही बटोरी। सारंगी पर पं. सतोष कुमार मिश्र ने संगत की। उनके बाद डा. विशाल जैन ने राग जोगकौंस में अलाप, जोड़ झाला की मधुर प्रस्तुति दी।

बीएचयू के पं. ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में गायन प्रस्तुत करते पदमश्री गुंदेचा बंधु ● जागरण

ध्रुपद महोत्सव

- कलाकारों ने देवी दयानी सुना श्रोताओं को किया मंत्रमुग्ध
- पं. ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में चल रहा आयोजन

ध्रुपद चार ताल में 'माई री आज को दिन', सुरताल में 'जी में बात है' राग भूपाली चार ताल बरसत घटा सुना कर अपनी साधना की बानगी दिखाई। पखावज पर अखिलेश गुंदेचा व सारंगी पर अनीश मिश्र ने संगत की। प्रो. के शशिकुमार ने धन्यवाद व संचालन ज्योति सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रो. रेवती साकलकर, प्रो. शारदा वेलंकर, प्रो. संगीता पंडित, डा. ज्ञानेशचंद्र पांडेय, प्रो. ऋत्विक सान्याल आदि उपस्थित थे।

अमर उजाला

वाराणसी
शनिवार, 11 नवंबर 2017

बीएचयू के ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में ध्रुपद महोत्सव की दूसरी शाम

गुंदेचा बंधुओं ने जीवंत की डागर घराने की परंपरा

ध्रुपद महोत्सव में गायन प्रस्तुत करते भोपाल के गुंदेचा बंधु। *अमर उजाला*

हिन्दुस्तान
वाराणसी • शनिवार • 11 नवम्बर 2017

गुंदेचा बंधु ने लुटाया चिरपरिचित गायकी का खजाना

वाराणसी। प्रमुख संवाददाता

ध्रुपद महोत्सव

- बीएचयू के ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में हुआ आयोजन
- खैरागढ़ से आए पृथ्वीराज कुमार ने किया पखावज वादन

बीएचयू के ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में आयोजित ध्रुपद महोत्सव के दूसरे दिन पद्मश्री से सम्मानित गुंदेचा बंधु के गायन से हुआ। उन्होंने आपला, जोड़ और झाला के माध्यम से अपनी चिरपरिचित गायकी का खजाना लुटाया।

गायन का आरंभ राग मुल्तानी में पारंपरिक आलाप से किया। इसके उपरांत चौताल में निबद्ध बंदिश 'बंशीधर पिनाकधर...' का प्रभावी गायन किया। उन्होंने सूलताल में 'देवी दयानी' की सुमधुर प्रस्तुति भी की। उनके साथ पखावज पर डा. अंकित पारिख तारपुरा पर पूर्णिमा कुमार एवं अंजलि कुमारी ने संगत की। दूसरी प्रस्तुति खैरागढ़ से आए पं. पृथ्वीराज कुमार ने स्वतंत्र पखावज वादन किया। उन्होंने उठान, प्रस्तार, परन, कमाली, लपेट, लड़ी और रेले आदि की प्रभावी प्रस्तुति की। उनके साथ सारंगी पर पं. संतोष कुमार मिश्र ने संगत की। इंदिरा गांध राष्ट्रीय कला केंद्र की क्षेत्रीय इकाई और भारत अध्ययन केंद्र तथा बीएचयू के संगीत एवं मंच कला संकाय के संयुक्त तत्ववाधान में आयोजित ध्रुपद महोत्सव के दूसरे दिन की तीसरी प्रस्तुति लेकर डा. विशाल जैन मंचासीन हुए। उन्होंने राग जोगकौंस में आलाप, जोड़ और झाला सुनाया। इसके बाद चारताल में निबद्ध बंदिश 'माई री आज कों दिन' सुनाने के बाद सूल ताल में बंदिश सुनाई। उनके साथ पखावज पर पं. अखिलेश गुंदेचा और सारंगी पर अनीश मिश्र न संगत की।

कार्यक्रम का सफल संचालन ज्योति सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन संकाय प्रमुख प्रो. के. शशिकुमार ने किया। इस अवसर पर प्रो. ऋत्विक सान्याल, डा. कमला शंकर, प्रो. केडी. त्रिपाठी, डा. विश्वनाथ पांडेय, संजय सिंह, गौतम चटर्जी, डा. प्रेम नारायण सिंह, अशोक कपूर, डा. सुबाषचंद्र यादव, प्रो. शारदा वेलेंकर, प्रो. रेवती साकलकर, प्रो. संगीता पंडित, डा. रमाशंकर, डा. नरेंद्रदत्त तिवारी, डा. विधि नागर, प्रो. प्रवीन उद्धव, प्रो. संगीता सिंह, डा. मधुरिमा भट्टाचार्य प्रमुख रूप से उपस्थित थीं।

बीएचयू के ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में आयोजित ध्रुपद महोत्सव के दूसरे दिन शुक्रवार को गायन करते पद्मश्री से सम्मानित गुंदेचा बंधु।

आज
वाराणसी, १० नवम्बर, २०१७

बीएचयू में ध्रुपद महोत्सव शुरू

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में आयोजित तीन दिवसीय ध्रुपद महोत्सव के पहले दिन गुरुवार को श्रीमती सोमवाला एवं पण्डित पुष्पराज कोष्टी के ध्रुपद गायन की प्रस्तुति में सुरों की लय ताल में श्रोता झूमते रहे। संगीत एवं मंच कला संकाय, भारत अध्ययन केन्द्र एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस महोत्सव का उद्घाटन कुंवर डाक्टर अनन्त नारायण सिंह ने किया। कार्यक्रम की पहली प्रस्तुति में श्रीमती सोमवाला ने राग भीमपलासी में आलाप, जोड, झाला और चोताल में बंदिश कुंजन में रचो रास, अद्भुत गत लियो गोपाल की प्रस्तुति की। तत्पश्चात सूलताल में निबद्ध रचना कैसे निढुर श्याम बिसर गयो धाम की मनोहारी प्रस्तुति की। उनके साथ पखावज पर पण्डित पृथ्वीराज कुमार सारंगी पर अनीश मिश्र एवं तानपूरे पर ऐश्वर्या और गीतिका ने कुशल संगति की। अगली प्रस्तुति में मुम्बई से पिण्डत पुष्पराज कोष्टी ने सुरबहार वादन किया।

वाराणसी, 10 नवंबर 2017 दैनिक जागरण

कैसे निठुर श्याम...

ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में ध्रुपद महोत्सव का आगाज

जागरण संवाददाता, वाराणसी : काशी हिंदू विश्वविद्यालय के पं. ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में गुरुवार को देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए कलाकारों ने गायन ने ध्रुपद महोत्सव का आगाज किया। प्रेक्षागृह में छात्र-छात्राओं की तालियों ने कलाकारों के हौंसले को खूब सराहा। इसमें खैरागढ़ से आई सोमबाला कुमार की पहली ही ध्रुपद गायकी ने माहौल में जोश भर दिया। उन्होंने राग भीमपलासी में अलाप, जोड़, झाला और चौताल में बंदिश 'कुंजन में रचो रास, अद्भुत गत लियो गोपाल' की प्रस्तुति की।

इसके बाद सोमबाला ने सूलताल में निबद्ध रचना ' कैसे निठुर श्याम, बिसर गयो धाम' की मनोहारी प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया। उनके साथ पखावज पर पं. पृथ्वीराज कुमार, सारंगी पर अनीश मिश्र, तानपूरे पर ऐश्वर्या और गीतिका ने संगति दी। वहीं मुंबई से पं. पुष्पराज कोष्टी ने राग हंसकिंकणी में अलाप, जोड़, झाला की प्रस्तुति दी।

इसके बार उन्होंने चार ताल में निबद्ध गत की हृदय स्पर्शी प्रस्तुति की। उनके साथ पखावज पर पं. अलचंद्र शर्मा, तानपूरे पर संस्प्रीति दास गुप्ता ने संगति दी। वहीं ध्रुपद गायक पं. उदय भवालकर ने भी अलाप, जोड़, झाला के माध्यम से खूबसूरत समां बांधी।

ध्रुपद महोत्सव में गायन प्रस्तुत करतीं सोमबाला कुमार

उनके साथ पखावज पर प्रताप ने संगति दी। इससे पहले संगीत एवं मंचकला संकाय, बीएचयू एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की ओर आयोजित इस महोत्सव की शुरूआत मुख्य अतिथि काशी नरेज डा. अनंत नारायण सिंह ने महामना पं. मदन मोहन मालीवय एवं पं. ओंकारनाथ ठाकुर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर की। इस मौके पर प्रो. शारदा वेलंकर, प्रो. राजेश शाह, प्रो. रेवती साकलकर, प्रो. संगीता पंडित, डा. विधि नागर, प्रो. प्रवीन उद्धव, प्रो. संगीता सिंह, डा. रमाशंकर सिंह, प्रेम नारायण सिंह, डा. ज्ञानेश चंद्र पांडेय, डा. अंबरिश, नरेशदत्त तिवारी, डा. रमा दुबे, डा. रजनीकांत आदि मौजूद थे। संचालन ज्योति सिंह व धन्यवाद ज्ञापन प्रो. के शशि कुमार ने किया।